गुरु तेग बहादुर हिंद दी चादर

समृद्ध परंपराओं की एक जीवंत कहानी

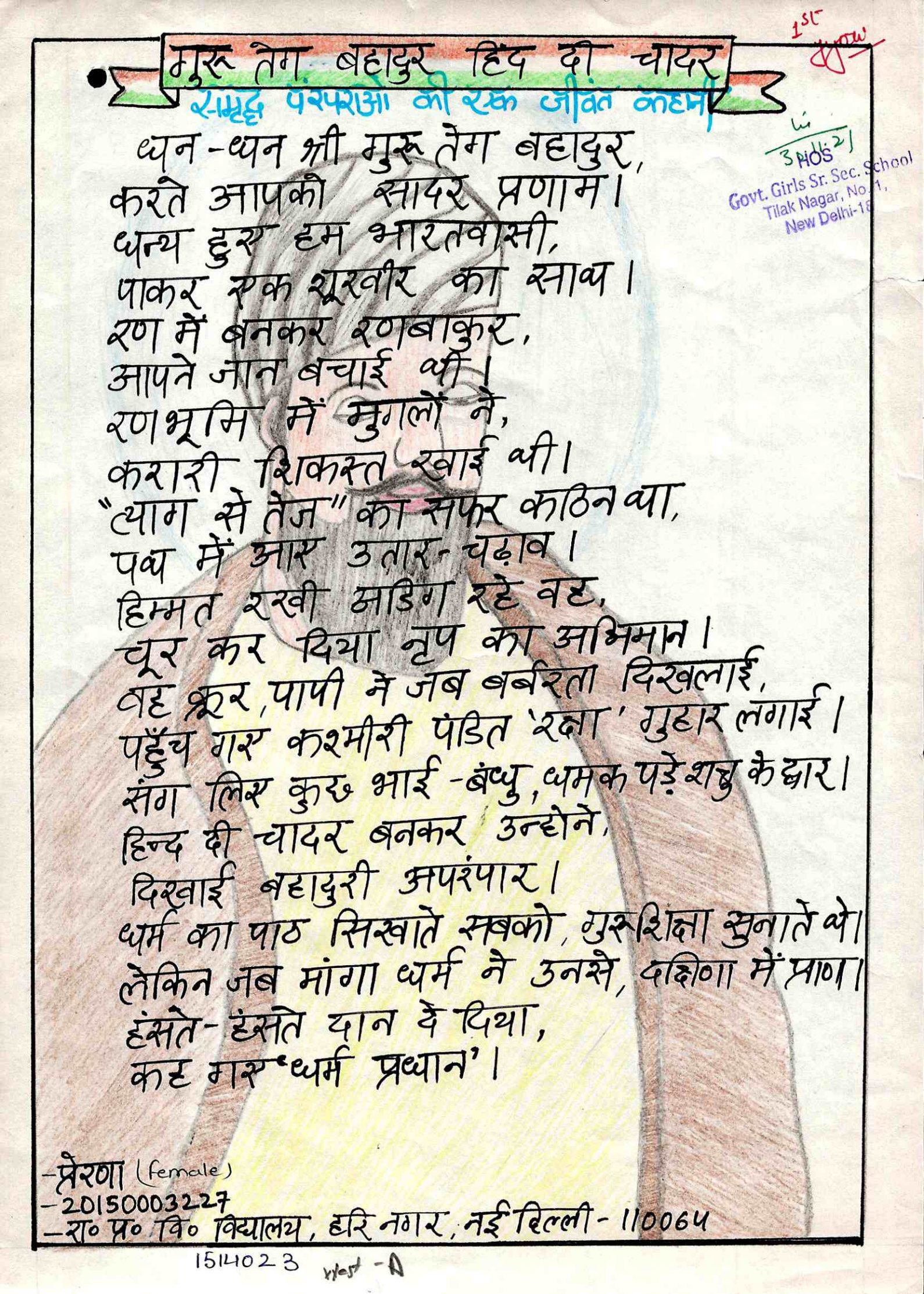

धन-धन श्री गुरु तेग बहादुर,
करते आपको सादर प्रणाम।
धन्य हुए हम भारतवासी,
पाकर एक शूरवीर का साथ।
रण में बनकर रणबाकुर,
आपने जान बचाई थी।
रणभूमि में मुगलों ने,
करारी शिकस्त खाई थी।
"त्याग से तेज" का सफर कठिन था,
पथ में आए उतार-चढ़ाव।
हिम्मत रखी अडिग रहे वह,
चूर कर दिया नृप का अभिमान।
वह क्रूर, पापी ने जब बर्बरता दिखलाई,
पहुँच गए कश्मीरी पंडित 'रक्षा' गुहार लगाई।
संग लिए कुछ भाई-बंधु, धमक पड़े शत्रु के द्वार।
हिन्द दी चादर बनकर उन्होंने,
दिखाई बहादुरी अपरंपार।
धर्म का पाठ सिखाते सबको, गुरु शिक्षा सुनाते थे।
लेकिन जब मांगा धर्म ने उनसे, दक्षिणा में प्राण।
हंसते-हंसते दान दे दिया,
कह गए 'धर्म प्रधान'।

-प्रेरणा (female)
-20150003227
-रा० प्र० वि० विद्यालय, हरि नगर, नई दिल्ली-110064

1514023 West-A

1st
3/11/21
HOS
Govt. Girls Sr. Sec. School
Tilak Nagar, No. 1,
New Delhi-18